RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 46 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 27 जनवरी, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

TAGE PRE-PAID
SS CENTRE
24 JAN 2019
NDHAR CITY R.M.S.

वर्ष–75, अंक : 46, 24-27 जनवरी 2019 तदनुसार 14 माघ, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

## मुक्ति के अधिकारी

**ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ**

**नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः।**
**ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।।**
**-ऋ० १०।६३।४**

**शब्दार्थ**–जो **ज्योतीरथाः** = ज्ञानरूपी ज्योतिर्मय रथ पर आरूढ़, **अहिमायाः** = अहीनशक्ति, कर्मकुशल विद्वान्, महाबुद्धिमान्, अतएव **अनागसः** = निर्दोष, पापरहित मनुष्य **स्वस्तये=सु-अस्तये** = जगत् की उत्तम स्थिति के लिए, संसार के कल्याण के लिए **दिवः** = प्रकाशमय प्रभु के **वर्ष्माणम्** = सुखवर्षक धाम में **वसते** = रहते हैं, अथवा अपने-आपको प्रभु की कृपा से आच्छादित कर लेते हैं, वे **नृचक्षसः** = जगद्गुरु, मनुष्यमात्र के शिक्षक **अनिमिषन्तः** = निर्निमेष होते हुए, आलस्य-प्रमाद आदि से रहित होकर, धारणा-ध्यान-समाधि का अनुष्ठान करने वाले, परम उत्साही **अर्हणाः** = योग्य **देवासः** = सर्वस्वत्यागी, निष्काम विद्वान् **बृहत्** = महान् **अमृतत्वम्** = मोक्ष को **आनशुः** = प्राप्त करते हैं।

**व्याख्या**–जन्म-मरण के क्लेश से छूटकर ब्रह्मानन्द की प्राप्ति का नाम मुक्ति है। वेद में अनेक स्थानों पर इसे अमृत नाम दिया गया है। शास्त्रों में इसे परम पुरुषार्थ, अत्यन्त पुरुषार्थ, कैवल्य, अपवर्ग, मोक्ष आदि नाम दिये गये हैं। संसार में एक भी प्राणी ऐसा नहीं, जो यह चाहता हो कि मैं दुःख से न छूटूँ, किन्तु कोई विरला ही दुःख से छूट पाता है। मन्त्र में दुःख से छूटकर ब्रह्मानन्द पाने वालों के कुछ लक्षण बताये गये हैं-

**(१) नृचक्षसः**–जगद्गुरु तथा मनुष्य को देखने वाले, जिन्हें मनुष्यत्व की परख हो। पशु-पक्षियों से मनुष्य का भेद जानकर, भोग-भाव से ऊपर उठकर, आत्मा-परमात्मा-चिन्तन में स्वयं रत होकर दूसरों को वैसी प्रेरणा करने वाले।

**(२) अनिमिषन्तः**–आलस्य-प्रमादादि-रहित, मुक्तिसाधनों के अनुष्ठान में जो क्षणभर भी प्रमाद न करें, वरन् **'गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्'**–धर्माचरण करते ऐसा सोचें कि मानो मृत्यु ने केश पकड़ रखे हैं, जाने कब झटका दे दे।

**(३) अर्हणाः**–स्वयं पूज्य तथा भगवत्पूजापरायण।

**(४) देवासः**–निष्काम तत्त्वज्ञानी।

**(५) ज्योतीरथाः**–ज्ञानरथारूढ़। आत्मा, परमात्मा तथा संसार के भेद का रहस्य जिन्होंने भली-भाँति जान लिया है।

**(६) अहिमायाः**–अहीनशक्ति, ज्ञानानुसार कार्य करने में कुशल।

**(७) अनागसः**–निर्दोष, पापरहित। यथार्थ ज्ञान के कारण जिन्होंने विकर्मों का सदा त्याग कर दिया है।

**(८) दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये**–जो ज्ञानबल को धारण करते हैं, प्रभु के सुखवर्षक तेज को धारण करते हैं। उस ज्ञान व तेज का प्रयोजन संसार-दशा-सुधार होता है।

सार यह है कि यथार्थ ज्ञान प्राप्त करके, उस ज्ञान के अनुसार सत्कर्म करने वाले निर्दोष लोकोपकारक महात्मा मोक्ष पाते हैं।

**(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

## आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 3 फरवरी 2019 को बरनाला में

**आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर** की अन्तरंग सभा दिनांक 11 नवम्बर 2018 के निश्चयनुसार सभा के तत्वावधान में आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन **3 फरवरी 2019** रविवार को बरनाला में करने का सर्वसम्मति से निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 3 फरवरी 2019 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में बरनाला में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें। इससे पूर्व भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 19 फरवरी 2017 को लुधियाना में और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में सफल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन कर चुकी है इसलिये सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि इस अवसर पर बड़ी संख्या में पधारने का कष्ट करें।

**प्रेम भारद्वाज**
**महामन्त्री**
**आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब**

# शिक्षा-वेदकालिक और आधुनिक

ले.-डॉ. वसुन्धरा रिहानी 1617, सैक्टर 44-बी, चण्डीगढ़

शिक्षा शब्द शिक्ष् (शिक्षणे) धातु से निष्पन्न है जिसका प्रयोग विद्या ग्रहण के लिये हुआ है। मनुष्य की श्रेष्ठता का आधार विद्या ही है। विद्या ही मनुष्य का तृतीय नेत्र है तथा नीतिकारों ने तो विद्या को विनयदात्री, सबका आभूषण, परदेस में मित्र, मानव की अतुलनीय कीर्ति और अत्युत्तम सम्पदा कहा है। यह तो देखने में भी आता है कि धन सम्पन्न व्यक्ति अपने देश में ही सम्मान प्राप्त करता है, जबकि विद्या सम्पन्न व्यक्ति सर्वत्र पूज्य होता है।

वैदिक विचारधारा के अनुसार बालक शैशवावस्था पार करके मातृमान्, पितृमान् बनकर आचार्यवान् होने के लिये गुरुकुल में प्रविष्ट होता है और आचार्य रूपी अग्नि में अपने आप को समिधा बनाकर ज्ञान-ज्योति से प्रदीप्त हो उठता है। हम देखते हैं कि शिक्षा आज भी दी जाती है और पूर्वकाल में भी दी जाती थी, परन्तु दोनों समयों की शिक्षा पद्धति में पर्याप्त अन्तर दिखाई देता है। निम्नलिखित कतिपय बिन्दुओं पर विचार करने से विषय को अधिक स्पष्टता से समझा जा सकता है।

**वेदकालिक शिक्षा का उद्देश्य:**

प्रत्येक कार्य सोद्देश्य किया जाता है न कि निरुद्देश्य। वैदिक काल में 'सा विद्या या विमुक्तये' सूक्ति के अनुसार शिक्षा या विद्या का उद्देश्य अविद्या आदि बन्धनों से व्यक्ति को मुक्ति दिलाना होता था। हमारे शास्त्रकारों का कहना है कि इहलोक में जीव अविद्या (अज्ञान), अस्मिता, राग, द्वेष आदि पंच क्लेशों के वशीभूत होने से जन्म जन्मान्तरों के कर्मों के संस्कारवश अपने वांछित मार्ग से भ्रष्ट होकर इधर उधर बेकार में ही भटक रहा है और उसे सन्मार्ग पर लाने के लिये 'असतो मा सद् गमय' और 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' प्रभृति आदर्शों की पूर्ति के लिये शिक्षित करना चाहिये। अपने विचारों का संशोधन करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। अभिप्राय: यह है कि वेदकालिक शिक्षा के अन्तर्गत सत्य की खोज, आत्मसाक्षात्कार, परम तत्त्व की उपलब्धि, चित्तवृत्ति-निरोध, चरित्र निर्माण, प्रतिभाशाली व्यक्तित्व, स्वसंस्कृति की रक्षा, सामाजिक व धार्मिक कर्त्तव्यों की पालना आदि विषयों पर विचार करके शिक्षा के इन्हीं उद्देश्यों को शाश्वत कहा गया है।

इस भवसागर से पार निकलने के लिये अविद्या अर्थात् लोक व्यवहार सिद्धि की शिक्षा एकदम त्याज्य भी नहीं है क्योंकि अविद्या की सहायता के बिना जीवन को शतायु नहीं बनाया जा सकता और मृत्युमय जीवन को लांघकर अमृतत्व की प्राप्ति भी इसी अविद्या रूपी सोपान के माध्यम से सम्भव है। अत: अविद्या और विद्या दोनों का युगपत् ज्ञान अपेक्षित है। इतना होने पर भी वैदिक शिक्षा का उद्देश्य विद्या ज्ञान ही रहा है, जिससे अमृत, अमरणभाव, जन्म-मरण के बन्धन से रहित परमानन्द और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

**आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य:-**

शिक्षा के वर्तमान वातावरण तथा उपलब्धि से शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षा शास्त्री तथा समाज सभी विक्षुब्ध हैं। आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य यान्त्रिक है। जिस प्रकार यन्त्र बिना कुछ सोचे समझे विद्युत के सामर्थ्यानुसार कार्य करता है, उसी प्रकार आज का छात्र भी पुस्तक में जो कुछ लिखा है उसे अक्षरश: रटकर डिग्री प्राप्त करके सर्विस पाने को ही शिक्षा का उद्देश्य समझ बैठा है। दूसरे शब्दों में आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य धनोपार्जन ही है। हाँ, इसमें कोई सन्देह नहीं कि व्यक्ति को जीवन यापन के लिये पढ़ लिखकर कोई न कोई व्यवसाय तो करना ही पड़ता है जिससे वह अपनी और अपने परिवारजनों की रोज़ी रोटी कमा सके। परन्तु इसका अर्थ यह तो नहीं कि 'रोज़ी रोटी वाद' मनुष्य को शिक्षा के आदर्श से ही पतित कर दे। वह एक पशु के समान केवल मात्र आहार विहार की चिन्ता में ही निमग्न रहे। स्वार्थपूर्ति के लिये भयंकर से भयंकर पाप, संघर्ष और युद्ध करने के लिये तत्पर रहे और इसी क्षुधापूर्ति के लिये वह नैतिक अनैतिक उपायों से धन संचय करने को अपनी चतुराई व बुद्धिमता समझे तथा आपसी सम्बन्धों की गरिमा को ताक पर रखकर व्यक्तियों का प्रयोग अपनी सुख सुविधा हेतु करे। ऐसा प्रतीत होता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में प्राचीन शिक्षा पद्धति के मौलिक उद्देश्यों, धार्मिक भावनाओं की जागृति, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, कर्त्तव्य परायणता, राष्ट्र एवं संस्कृति की रक्षा आदि को एकदम विस्मृत ही कर दिया है।

**वेदकालिक शिक्षा संस्थाएं:**

विद्यार्थी का गुरुगृह में रहना तथा उसकी सेवा करना वैदिक परम्परा थी। उस युग में विद्यार्थी वृक्षों के नीचे बैठकर खुले में पढ़ा करते थे, जहां न तो भवन अट्टालिकाओं की आवश्यकता होती थी और न फर्नीचर की। जितना धन आज इन निर्जीव वस्तुओं पर लगाया जाता है तब उतना छात्र निर्माण में लगता था। उन गुरुकुलों में एक तरफ वेद मंत्रों का सस्वर पाठ होता था तो दूसरी तरफ यज्ञ विद्या की व्याख्या चल रही होती थी। ऐसे आश्रमों में चारों तरफ शान्ति का साम्राज्य होता था। जहां न कभी कलयुग आ सकता था और न ही असत्य झांक सकता था। तप से तप्त और हृदय से त्यागी सुयोग्य अध्यापक छात्र निर्माण में रत रहते थे और विद्यार्थी की हर गतिविधि पर दृष्टि रखते हुए उसे चरित्रवान्, विद्यावान् और तेजस्वी बनाने का भरसक प्रयत्न करते थे। ऐसे गुणनिधान शिक्षकों, जिनमें वरुण, सोम, औषधि और पयस् के गुण होते थे, के सान्निध्य में रहकर छात्रों में ज्ञान, मनोबल और चारित्रिक बल स्वयं प्रवेश पा जाते थे। विद्यार्थी के व्यक्तित्व के विकास के लिये यही तो सब कुछ चाहिये होता था। यह वेदकालिक शिक्षा का ही परिणाम है कि यहां वसन्तु, कैत्स, द्यौम्य, उपमन्यु, आरुणि, उद्दालक जैसे धार्मिक विद्वान और चन्द्रगुप्त जैसे वीर युवक निकले हैं। पाणिनि, पतंजलि, कात्यायन जैसे वैयाकरणों का निर्माण हुआ है जिनके कारण भारत आज भी जगद्गुरु कहलाता है।

**आधुनिक शिक्षा संस्थाएं:**

आज के भौतिकवादी युग में आधुनिक शिक्षा संस्थाएं तो मानो फैशन संस्थाएं बन गई हैं और आज की शिक्षा प्रमाणपत्र केवल बाह्य आडम्बर है। प्रत्येक शिक्षा संस्था सुन्दर से सुन्दर भवन चाहती है जो आधुनिक फर्नीचर आदि से सुसज्जित हो जहां भेड़ बकरियों की तरह छात्रों को भर दिया जाये और उनकी रुचि अरुचि को जाने बिना उन्हें लाचार कर दिया जाये कि वे निर्धारित लैक्चर सुनें और याद करके परीक्षा भवन में उगल दें। विद्यार्थी के आत्मिक बल के विकास और नैतिक शिक्षा आदि पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। ऐसी संस्थाओं में शान्ति के स्थान पर सर्वत्र अशान्ति, धूर्तता और कटुता दिखाई देती है। बीच शहर में इन संस्थाओं की स्थिति के कारण पढ़ाई का उचित वातावरण दुर्लभ हो जाता है। विश्व बन्धुत्व और राष्ट्रीयता की बात तो दूर प्रान्तीयता के नाम पर ही मानव अपने मार्ग से भटक रहा है। इसके अतिरिक्त जिन शिक्षकों पर देश के भविष्य के निर्माण का उत्तरदायित्व है उनकी स्थिति मत पूछिये। पहले जहां गुरु के पास शिष्य पढ़ने जाता था वहां आज इस पूंजीवादी युग में गुरु शिष्य को पढ़ाने जाता है। उसे रोज़ी रोटी के जुगाड़ के लिये अपनी विद्या को दर दर जाकर बेचना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उन अध्यापकों से हम त्याग तपस्या आदि आदर्शों की क्या आशा कर सकते हैं। इसके साथ साथ ग्रुप कोचिंग आदि की प्रथा ने भी शिक्षा को क्रय विक्रय का बाजार बना दिया है। यह आधुनिक शिक्षा पद्धति की ही देन है कि मनुष्य का दिमाग बढ़ गया है और दिल संकुचित हो गया है। बुद्धि का विस्तार हो रहा है पर विवेक लापता हो गया है जिससे व्यक्ति में अनुशासनहीनता और चरित्रहीनता की वृद्धि होने लगी है। जब कि गाँधी जी ने कहा था कि 'ज्ञान चारित्र्य के लिये दिया जाना चाहिये। ज्ञान साधन है चारित्र्य साध्य है।'

**वेदकालिक शिक्षा प्रणाली:**

प्राचीन शिक्षा प्रणाली जीवनोपयोगी थी। गुरुगृह में रहते हुए भी छात्रों को व्रत रखवाकर, हाथ में कमण्डल देकर नंगे पांव भिक्षा मंगवाने के माध्यम से यह उपदेश दिया जाता था कि विद्यार्थीकाल में यदि तुम्हें किसी प्रकार की विपत्ति का भी सामना करना पड़े तब भी चिन्ता नहीं करना, न ही घबराना। तात्पर्य यह कि विद्यार्थी को लक्ष्य प्राप्ति के लिये विघ्न बाधाओं से जूझना सिखाया जाता था। भोजनार्थ भिक्षा वृत्ति के द्वारा विद्यार्थी के अहंकार और उच्छृंखलतादि दुर्गुणों को समाप्त कर उसमें त्याग, विनम्रता और अन्य मानवीय गुणों को

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

# अमर सेनानी-स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को आर्य जगत में अमर सेनानी के रूप में जाना जाता है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने अपने तप और त्याग से आर्य समाज को नई दिशा देने का कार्य किया है। आर्य सन्यासियों में यदि किसी वीतराग, तपस्वी, परदु:खकातर, तुरीयाश्रमी को लौह पुरूष की संज्ञा दी जा सकती है तो इसके वास्तविक अधिकारी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज हैं।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म एक सिख परिवार में हुआ। लुधियाना जिले के मोही गांव में इनका जन्म हुआ। पंजाब भूमि को यह गौरव प्राप्त है कि यहां पर महर्षि दयानन्द के गुरू दण्डी स्वामी विरजानन्द ने जन्म लिया। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाज पतराय, स्वामी दर्शनानन्द आदि इसी पंजाब की धरती पर पैदा हुए। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म संवत् १९३४ के पौष मास की पूर्णिमा को सरदार भगवान सिंह नामक एक सिख के घर इस महापुरूष ने जन्म लिया। जिस समय बालक केहरसिंह का जन्म हुआ उस समय स्वामी दयानन्द जी महाराज वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए लुधियाना पधारे हुए थे। उस समय इस बात को कौन जानता था कि सिख घराने में पैदा हुआ यह बालक महर्षि दयानन्द की वाटिका को सींचेगा। उनका बचपन का नाम केहर सिंह था। बालक केहर सिंह की आरम्भिक शिक्षा ग्राम मोही में हुई। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की रूचि बचपन में ही आध्यात्मिक ग्रन्थों में थी। इसके लिए उन्होंने संस्कृत का अभ्यास किया। वे छोटी आयु में वेदान्त दर्शन का अध्ययन करते रहे। उस समय में प्रचलित कुरीतियों के कारण स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को बचपन में गृहस्थ के बन्धनों में बाँध दिया गया। किन्तु यह दैवी संयोग ही था कि उनकी पत्नी का देहांत हो गया। इससे पहले कि उन्हें दोबारा गृहस्थ के बन्धन में बाँधा जाता , वे वैराग्य पथ के पथिक बन गए और उन्होंने गृहत्याग कर दिया।

केहरसिंह के ननिहाल गांव लताला में उदासीन सम्प्रदाय के एक मठ में पं. विशनदास नामक आर्य विद्वान् रहते थे। इनके सम्पर्क में आने से केहरसिंह भी आर्य विचारधारा में दीक्षित हो गए। अब उन्होंने अध्ययन और सत्संग को ही जीवन का लक्ष्य बना लिया इसलिए वे इधर-उधर भ्रमण करते रहते थे। २३ वर्ष की आयु में केहरसिंह ने सन्यास की दीक्षा ले ली और प्राणपुरी नाम धारण किया। साधु प्राणपुरी में अब संस्कृत पढ़ने की अदम्य प्रेरणा जागृत हुई। उन्होंने अमृतसर में स्वामी स्वरूपदास से कुछ समय के लिए वेदान्त तथा न्यायदर्शन पढ़े। उन दिनों स्वामी स्वतन्त्रानन्द अपने शरीर पर मात्र कौपीन ही धारण करते थे और पात्र के रूप में एक बाल्टी रखते थे। लोग उनको बाल्टी वाले साधु के नाम से पुकारने लगे। उनकी स्वतन्त्र प्रकृति के कारण लोग उन्हें स्वामी स्वतन्त्रानन्द कहने लगे और बाद में वे इसी नाम से प्रसिद्ध हो गए।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी प्रतिदिन नियम से योगाभ्यास करते थे और वेद का स्वाध्याय किया करते थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की जीवनचर्या निश्चित थी। उनमें यह एक विशेष गुण था कि चाहे कितने ही दिन क्यों न बीत जाए वे दोपहर का भोजन 12 बजे के बाद नहीं करते थे। रात्रि के समय 8 बजे के बाद दूध नहीं पीते थे। वे भोजन स्वाद के लिए नहीं, अपितु शरीरयात्रा के लिए करते थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी लगातार वेद प्रचार करते थे। न केवल व्याख्यानों के द्वारा, अपितु पारस्परिक बातचीत द्वारा भी। पंजाब, सिंध और बलोचिस्तान, कश्मीर और दिल्ली का कोई स्थान ऐसा नहीं था जहां उनके भाषण न हुए हों। इसके अतिरिक्त सारे भारत की पदयात्रा और प्रचार किया। इसके साथ ही मारीशस द्वीप, अफ्रीका, थाइलैण्ड आदि अनेक देशों में वैदिक धर्म का प्रचार किया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने अपने भरपूर यौवन में धन-धान्य से भरे घर का परित्याग किया। उनके पिताजी उन्हें सेना में भर्ती कराके सेना का बहुत बड़ा अधिकारी बनाना चाहते थे, किन्तु उन्हें तो समाज का उच्चकोटि का सेवक बनना था।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज निड़रता की मूर्ति थे। उन्होंने ऐसे कार्य किए हैं जो उनकी वीरता को प्रस्तुत करते हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने आर्य समाज के लिए एक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में कार्य किया। जिस प्रकार एक वीर योद्धा का लक्ष्य रणभूमि में जाकर अपने देश के लिए मर-मिटना होता है उसी प्रकार स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के जीवन का लक्ष्य महर्षि दयानन्द की विचारधारा को जन-जन में फैलाना था। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज वीर थे और वीरों के वंशज थे। उन्होंने अपने जीवन काल में कई संग्रामों में भाग लिया, कई मोर्चों को चलाया और प्रत्येक मोर्चे में अपने तपोबल, दूरदर्शिता, नीतिमत्ता व त्याग के कारण विजय प्राप्त की। सन् 1938 में जब आर्य समाज ने हैदराबाद के क्रूर निजाम के शासन से टक्कर लेने का निश्चय किया स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को इस संग्राम का फील्ड-मार्शल बनाया गया। महात्मा नारायण स्वामी प्रथम सर्वाधिकारी बनकर सत्याग्रह को निकले। संसार भर में यह प्रथम सत्याग्रह था जो स्थानीय होते हुए भी स्थानीय नहीं था। सत्याग्रह किया गया था राज्य के पीड़ित लोगों के नागरिक, धार्मिक व सांस्कृतिक अधिकारों के लिए, परन्तु सत्याग्रही दूर-दूर से, सहस्रों मीलों की दूरी से चलकर सत्याग्रह शिविरों में जेलें भरने के लिए पहुँचे। महात्मा नारायण स्वामी जी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज द्वारा इस धर्म युद्ध के संचालन के बारे में लिखा है कि- सत्याग्रह का संचालन इतनी उत्तमता से हुआ कि इस देश ही में नहीं बल्कि इंग्लैंड में भी उसका प्रभाव पहुंचा। इस प्रकार स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने अपने नीतिकौशल से सत्याग्रह का संचालन किया और अपनी संगठन शक्ति का परिचय दिया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आर्य समाज के लौह पुरूष थे। वे किसी भी मत, पन्थ और प्रलोभन के आगे नहीं झुके। चाहे वह लोहारू नामक रियासत की घटना हो या मालेरकोटला के नवाब से टक्कर लेना हो। वे किसी भी परिस्थितियों में किसी के आगे नहीं झुके और हमेशा विजयी रहे।

राष्ट्र सेवा में भी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी अग्रगण्य थे। लार्ड हार्डिंग के ऊपर गोला फैंका गया तब भी उनकी जांच की गई थी। पंजाब में अंग्रेज गवर्नर पर भी गोली चलाए जाने वाले लोगों के साथियों में उनका नाम लिया गया था। लोहारू में जब आर्य समाज के जलूस पर मुसलमानों से शस्त्रों सहित आक्रमण किया तब स्वामी जी सबसे आगे थे। मुसलमानों ने लाठी कुल्हाड़ी आदि हथियारों से स्वामी जी पर प्रहार किए, परन्तु स्वामी जी अड़िग रहे। इस अड़िग भाव को देखकर मुसलमान भाग गए। वहां के पुलिस अधिकारी ने अपनी गवाही में कहा था कि यदि स्वामी जी लाठी उठा लेते तो न जाने क्या हो जाता। स्वामी जी ने इतना ही कहा हम साधु हैं-तुमने रोटी नहीं दी सोटी दी हमारे लिए कोई अन्तर नहीं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जितने बलवान थे उतने ही शान्त थे।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी दूसरों की भावनाओं का हमेशा सम्मान किया किन्तु अपनी विचारधारा नहीं छोड़ी। अत: लोहारू में हुए हमले से सिर में तीन इंच गहरा घाव हुआ तो पैदल चलकर स्टेशन पहुंचे। सिलाई के समय क्लोरोफार्म नहीं लिया तथा पुन: शीघ्र लोहारू जा पहुंचे। परिणामस्वरूप नवाब को झुकना पड़ा। पंजाब के मालेरकोटला में तो आपका नाम सुनते ही मन्दिर के ताले खोल दिए गए। 1935 में स्वामी स्वतन्त्रानन्द के कारण ही लाहौर में बूचड़खाना नहीं खुल सका जिसे बाद में पठानकोट में लगाने की योजना बनी। इस पर एक मुसलमान ने लिखा था कि अंग्रेज सरकार को यह समझ लेना चाहिए कि टक्कर किससे है? यह टक्कर उसी तेजस्वी, प्रतापी,वीर आर्य नेता से है जो अभी-अभी हैदराबाद रियासत को पाठ पढ़ाकर आया है। यह फकीर नहीं तेजस्वी पुरूष है जो कदम आगे धरकर पीछे हटाना नहीं जानता। सरकार बुद्धिमत्ता से कार्य ले नहीं तो पछताना पड़ेगा।

ऐसे वीर, तपस्वी, त्यागी, लौह पुरूष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जीवन अनुकरणीय है। वे महर्षि दयानन्द के सच्चे सिपाही थे। वैदिक धर्म की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व आहूत कर दिया। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करना चाहिए।

**प्रेम भारद्वाज**
**संपादक एवं सभा महामन्त्री**

स्वास्थ्य चर्चा

# घरेलू उपचार

ले.-स्वामी शिवानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

मासिक धर्म की पीड़ा-नीस के पत्ते गर्म करके नाभि के नीचे बाँधें। पीड़ा दूर हो जायेगी।

मूत्र विकार-१. गूलर के पके फलों का चूर्ण १० ग्राम ताजा जल के साथ १ माह सुबह शाम सेवन करें। जौ की रोटी खायें। मूत्र सम्बन्धी सभी विकार दूर होते हैं।

२. फिटकरी भुनी हुई १५ ग्राम समभाग मिश्री दोनों को पीस कर शीशी में रख लें मिलाकर के ५ ग्राम मुंह में डाल कर ऊपर से ठन्डा दूध पियें। १ सप्ताह प्रयोग करें।

मूत्राशय की दाह-१. नित्य प्रति प्रातः सांय ५-५ ताजा फूल गुलाब के लेकर ५-५ ग्राम मिश्री के साथ खाकर ऊपर से गाय का दूध पियें। १५ दिन में अति लाभ होगा। मूत्राशय का दाह लाल पेशाब आदि ठीक होते हैं।

मरे हुए बच्चे को गर्भ से निकालना-यदि बच्चा गर्भ में मर जाये तो अपामार्ग (चिरचिटा लम्बी बाल वाला) को जड़ सहित उखाड़कर लायें। इसकी जड़ धोकर ४-५ अंगुल की लम्बाई की लेकर इसके सिरे पर धागा बाँध दो और जड़ को स्त्री की योनि में रख दीजिए। डोरा वाला भाग बाहर रहे। कुछ ही मिनट में बच्चा गर्भ से बाहर आ जाएगा। बच्चे के बाहर आते ही धागे को खेंचकर जड़ को घर से बाहर फेंक दो।

नोट-बच्चा बाहर आते ही जड़ी को घर से बाहर फेंक दो अन्यथा गर्भाशय भी बाहर निकल आयेगा।

मेद रोग (मोटापा) मूली के बीजों को बारीक पीसकर प्रतिदिन ५ ग्राम चूर्ण को शहद २० ग्राम लेकर चाटें। उसके बाद १० ग्राम शहद का शर्बत बनाकर पिला दें। १ माह सेवन करें।

2. शहद पानी में मिलाकर पियें या त्रिफला १० ग्राम २० ग्राम शहद का शर्बत पियें।

मेधा बुद्धि के लिए-वच का चूर्ण ३० ग्राम सम भाग मिश्री मिला कर रख लें ५ ग्राम गौ दुग्ध के साथ पियें।

मोच-चोट-गेहूँ का आटा ५० ग्राम हल्दी १० ग्राम दोनों को ग्वार के पाठे के गूदे में मिलाकर तिल के तेल में मिला कर गर्म-२ बाँधें। पुनः गर्म करके उसकों बाँधें। भयानक से भयानक मोच चोट ठीक हो जाती है।

मोटा होने के लिए-दूध में शहद डालकर पियें।

मोटापा कम करने के लिए-प्रतिदिन ताजा नीबू गर्म पानी में निचोड़ कर रस मिलाकर पियें।

२. प्रातः सांय हल्दी का चूर्ण ३-३ ग्राम गौ दुग्ध से लें।

मोतिया बिन्दु-१. सोंफ आधा किलो समभाग खांड देशी दोनों को पीसकर मिला लें। रात्रि को १० ग्राम दवा फांक कर १ कप पानी पियें।

२. प्रतिदिन सफेद चन्दन घिस कर माथे पर लगायें।

3. अपामार्ग की जड़ (चिरचिटा लम्बी बाल वाला) शहद में घिसकर आँखों में लगाएें।

४. चौलाई के पत्तों का रस प्रतिदिन पीने से मोतिया बिन्दु कट जाता है।

५. झोझरु के बीज पीस कर बारीक कपड़ छन कर शीशी में रख लें रात्रि को सुर्मे की तरह आखों में लगायें।

६. ककरोंदा के पत्तों का रस २-२ बूंद ड्रापर से आँखों में डालें।

७. निर्मली के बीज बारीक पीस छान कर शीशी में रख लें। सुर्मे की तरह लगाऐं। या बीज घिस कर लगायें।

मोती झारा (मोतीझला)-१. नीम गिलोय के काढ़े में शहद मिला कर पिलायें।

२. प्रतिदिन तुलसी के पत्तों का रस शहद में मिलाकर चटायें

३. लिहसोड़े के पत्ते १५ नग मिट्टी के सकोरे में अर्क गावजवी डालकर भिगो दें। रोगी को जब प्यास लगे मिश्री डालकर यही अर्क पिलायें। ३-४ दिन में बुखार उतर जाता है। यह दवा दाने निकलने के बाद प्रयोग करें। वड़ की कोपल एक तोला १० ग्राम। बाजरा १० ग्राम दोनों को पानी में उबालकर छानकर काढ़ा पिलायें।

योनि शूल-१. सदा हरी बूटी का रस बहते हुए रक्त को उसी समय बन्द कर देता है।

२. पीपल के ताजा कोमल पत्ते लेकर कूटकर रस निचोड़ लें। हर प्रकार बहते रक्त को दूर करता है। दवा ३ घन्टे के बाद प्रयोग करें। खूनी पेशाब, बवासीर, खूनी पेचिस, खून थूकना नकसीर को शीघ्र रोकता है।

रक्त चाप-१. सर्पगन्धा (असरौल बूटी) को कूटपीस कर कपड़े छन कर रख लें। २-२ ग्राम प्रातः सांय पानी से दें।

२. गेहूँ की वासी रोटी प्रातः दूध में भिगोकर खायें (उच्च रक्तचाप के लिए सर्वश्रेष्ठ है।

३. लहसुन की ५ कली का रस निकाल शहद के साथ चाटें।

रक्त प्रदर-१. हरी दूव का रस १० ग्राम प्रातः सांय मिश्री मिलाकर पियें।

२. अशोक की छाल ५० ग्राम को २ किलो पानी में काढ़ा करें चौथाई पानी रहने पर उतारकर छान लें। समभाग दूध मिलाकर पकायें। आधा रह जाए तब उतार कर सुबह सांय पिलायें।

३, असगन्ध नागौरी ३० ग्राम राल सफेद २० ग्राम चीनी ६० ग्राम सबको पीसकर चूर्ण बना लें। १० ग्राम दवा ताजा जल के साथ पियें।

युवा जीवन के लिए-मुलैठी का चूर्ण शहद के साथ प्रातः सांय सेवन करें।

रक्त विकार-प्रतिदिन वछिया का पेशाब छान कर १० ग्राम पियें।

२. २ ग्राम अमर वेल २ ग्राम मरिवा (उसवा) कूटकर काढ़ा प्रातः सांय पियें। फोड़े नहीं होंगे।

रक्त शोधक-सत्यानाशी कटेरी की जड़, १० ग्राम १० काली मिर्च दोनों घोंटकर पियें।

रक्त स्त्राव-लाजवन्ती का चूर्ण ३ ग्राम फांककर ऊपर से बताशे का शर्बत पियें स्त्रियों का रक्त स्त्राव बन्द हो जाता है।

रतोंधी-१. काली मिर्च को करेलों के पत्तों के रस में घिसकर लगायें।

२. लहसुन का रस रात्रि को १-२ बूंद आँखों में डालें।

रसौली-१. सज्जी खार, मूली खार शंक भस्म तीनों को सम भाग गौ मूत्र में मिलाकर लेप करने से प्रत्येक प्रकार की रसौली और गाँठ नष्ट हो जाती है।

२. ग्वार के पाठे का रस १० ग्राम सुहागा बारीक पिसा हुआ १ ग्राम मिलाकर रात्रि को पिला दें। १ माह प्रयोग करें। रसौली नष्ट हो जायेगी। (यह दवा तिल्ली, वायु गोला के लिए लाभ प्रद है।

रसौली नाक के अन्दर की-लहसुन को हुक्के के पानी में घिस कर लगायें नाक के अन्दर की रसौली जड़, मूल से दूर हो जायेगी।

राजयक्ष्मा-असगन्ध, पीपल छोटी दोनों समभाग लेकर बारीक पीसकर चूर्ण बनाकर छानकर शीशी में रख लें। बराबर मिश्री मिलाकर घी से चिकना कर दूना शहद मिला लें। ५ ग्राम दवा बकरी के दूध के साथ सेवन करें। प्रातः सांय।

रीढ़ का दर्द-आक के फूल, भांग के पत्ते, सोंठ, सुरंजान मीठी सब १०-१० ग्राम कूट छान १०० सरसों के तेल में मिलाकर अग्नि पर गर्म करें। सब दवा उसमें डालें जब तेल पक जाय तब उतार कर ठन्डा होने पर छान लें। इस तेल की मालिश करने से रीह और सर्दी से होने वाले दर्दो को लाभ मिलता है।

रीगन वाय-१. कमर दर्द हो तो तारपीन के तेल की मालिश करें।

२. असगन्ध नागौरी, सुरंजान मीठी दोनों समभाग ५०-५० ग्राम सोंठ २५ ग्राम मिश्री १२० ग्राम सबको बारीक पीस ५ ग्राम औषधि ताजा जल से प्रयोग करें। यह जोड़ों का, रीगन वाय, कमर दर्द में उपयोगी है।

३. बथुआ के ताजा पत्तों का रस पियें।

४. गौ मूत्र १० ग्राम ३० ग्राम अण्डी का तेल मिलाकर पिलाने से रीगन वायु नष्ट हो जाती है।

५. फिटकरी सफेद बूनकर फूला कर लें १० ग्राम का उसमें सुरजान मीठी ३० ग्राम गोंद बबूल का (कीकर का) २ ग्राम तीनों को पीस और पानी के छींटा देकर मटर की गोली बना लें। १-१ गोली दिन में ३ वार दें रेगिन वाय खूनी बवासीर को नष्ट करने के लिए राम बाण है।

रोमान्तिका (खसरा)-करेला के पत्तों का रस १० ग्राम २० ग्राम हल्दी का चूर्ण। मात्रा १ से ३ ग्राम तक मिलाकर पिलायें। खसरा दूर होगा।

लकवा-१. ओंघा की जड़ १ ग्राम काली मिर्च १ नग दोनों को पीसकर गौ दुग्ध में मिला नाक में २-३ बूंद टपकायें।

२. दशमूल का काढ़ा बनायें जब ५० ग्राम पानी का १० ग्राम रह जाय तब छोड़ा सा सैंधा नकम और २० ग्राम अन्डी का तेल मिलाकर पिला दें? सप्ताह प्रयोग करें।

३. लकवा वाले स्थान पर खजूर का गूदा मलें।

४. तिल का तेल पियें।

लकवा-शुद्ध कुचले का चूर्ण १/२ ग्राम शहद में मिलाकर चाटें। ऊपर से गर्म दूध पियें। **(क्रमशः)**

# यजुर्वेद में गृहस्थ का धर्म

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

वैदिक संस्कृति की तीन विशेषताएं हैं-संस्कार, आश्रम व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था। इस सबका एक ही उद्देश्य है कि मनुष्य का जीवन ऐसा बने कि वह इस जीवन में विकास के शीर्ष पर पहुंच जाये और मोक्ष की प्राप्ति की योग्यता भी प्राप्त कर ले।

संस्कार के द्वारा मनुष्य अपने अन्दर व्याप्त दुर्गुण, दुर्व्यसन और सभी बुराईयों को त्याग देने का प्रयास करता है और साथ ही साथ अपने अन्दर सद्गुणों का आधान भी करता जाता है।

आश्रम व्यवस्था मानव जीवन को चार भागों में बांट देती है।

मनुष्य की आयु 100 वर्ष की मानकर जीवन के प्रारम्भिक 25 वर्ष ब्रह्मचर्य का निर्वाह करते हुए विद्याध्ययन कर तथा शरीर को पुष्ट कर ब्रह्मचर्याश्रम से आश्रमों के लिए अपने को योग्य बनावे। अगले 25 वर्षों का काल गृहस्थ में रहकर त्याग मय जीवन व्यतीत करने, विवाह कर श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न करने, सन्तान को उचित शिक्षा दिलाने और शेष तीनों आश्रमों की यथा शक्ति सहायता करते हुए गृहस्थ धर्म का पालन करना होता है। 50 वर्ष की आयु हो जाने पर अपने गृहस्थ के उत्तर दायित्व को अपने बड़े पुत्र पर छोड़ कर वानप्रस्थ में प्रवेश करना है। वानप्रस्थ के रूप में उसे पुनः शास्त्रों का अध्ययन करना, किसी गुरूकुल में रहकर ब्रह्मचारियों का अध्यापन करना और ईश्वराधना तथा योग विद्या का अभ्यास करना होता है। फिर 75 वर्ष की आयु हो जाने पर सन्यास ग्रहण कर शेष सम्पूर्ण जीवन समाज में धर्म प्रचार करते रहना है। सन्यासी को माया-मोह से दूर रहना होता है। मान-अपमान पर ध्यान न देकर अपने कर्त्तव्य कर्म पर दृढ़ रहकर समाज को धर्म का तत्व समझाना होता है।

इसी प्रकार गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर सम्पूर्ण मानव समाज को चार भागों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्व और शूद्र में बांटा गया है। इससे मनुष्य अपनी रूचि के वर्ण में रहकर अपना विकास उचित रूप से कर लेता है। वेदों में संस्कार, आश्रम और वर्ण व्यवस्था पर अति विस्तृत वर्णन है। हम इस लेख में यजुर्वेद के आधार पर यह जानने का प्रयत्न कर रहे हैं कि गृहस्थ का मुख्य धर्म क्या है?

**आतिष्ठ वृत्र हन्नथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी।**
**अर्वाचीनꣳसु ते मनोग्रावा कृणोतु वग्नुना।**
**उपयामगृहीतोसीन्द्रयत्वाषोडशिनऽएष ते योनिरिन्द्रायत्वा षोडशिने।।**

**यजु. 8.33**

**पदार्थ**-हे (वृत्रहन्) शत्रुओं को मारने वाले गृहाश्रमी तू (ग्रावा) मेघ के तुल्य सुख बरसाने वाला है (ते) तेरे जिस रमणीय विद्या प्रकाशमय गृहाश्रम या रथ में (ब्रह्मणा) जल वा धन से (हरि) धारण और आकर्षण अर्थात् खींचने के समान घोड़े (युक्ता) युक्त किये जाते हैं, उस गृहाश्रम करने की (आतिष्ठ) प्रतिज्ञा कर। इस गृहाश्रम में (ते) तेरा जो (मनः) मन (अर्वाचीनम्) मन्दपन को पहुंचता है उसको (वग्नुना) वेद वाणी से शान्त कर। जिससे तू (उपयामगृहीतः) गृहस्थाश्रम करने की सामग्री ग्रहण किय हुए (असि) है इस कारण (षोडशिने) सोलह कलाओं से परिपूर्ण (इन्द्राय) परमैश्वर्य देने वाले गृहस्थाश्रम करने के लिए (त्वा) तुझको उपदेश करता हूँ। (एषः) यह (ते) तेरा (योनिः) घर है इस (षोडशिने) सोलह कलाओं से पूर्ण (इन्द्राय) परमैश्वर्य देने वाले गृहस्थ आश्रम के लिए (त्वा) तुझको आज्ञा देता हूँ।

**भावार्थ**-गृहस्थ आश्रम के अधीन सब आश्रम हैं। वेदोक्त श्रेष्ठ व्यवहार से जिस गृहस्थ आश्रम की सेवा की जाय उससे इस लोक और परलोक का सुख होने से परमैश्वर्य पाने के लिए गृहस्थाश्रम से सेवना उचित है। गृहस्थाश्रम वास्तव में पति-पत्नी के आधार पर ही चलता है।

यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र संख्या 27 के भावार्थ में स्वामी दयानन्द लिखते हैं कि स्त्री अपने पति से नित्य प्रार्थना करे कि जैसे मैं सेवा के योग्य आनन्दित चित्त आपको प्रतिदिन चाहता हूँ। वैसे ही आप भी मुझे चाहो और अपने पुरूषार्थ से मेरी रक्षा करो जिससे मैं दुष्टाचरण करने वाले मनुष्य के लिये हुए अपराधी की भागिनी किसी भी प्रकार न होऊँ।

इसी विषय को पुनः उठाते हुए यजुर्वेद का कथन है-

**वि पायसा पृथुना शोशुचानो बाधस्व द्विषो रक्षसोऽअमीवाः।**
**सुशर्मणो बृहतः शर्मणि स्यामग्नेरहं सुहवस्य प्रणीतौ।।**

**यजु. 11.49**

**पदार्थ**-हे पतिदेव। जो आप (पृथुना) विस्तृत (वि) विविध प्रकार के (पाजसा) बल के साथ (शोशुचानः) शीघ्र शुद्ध सदा वर्तें और (अमीबाः) रोगों के समान प्राणियों को पीड़ा देने वाली (रक्षसः) दुष्ट (द्विषः) शत्रु रूप व्यभि चारिणी स्त्रियों को (अधस्व) ताड़ना देवें तो मैं (बृहतः) बड़े (सुशर्मणः) अच्छे शोभायमान (सुहवस्य) सुन्दर लेन देन का व्यवहार जिसमें हो ऐसे (अग्नेः) ऐसे अग्नि के तुल्य आपके (शर्मणि) सुख कारक घर में और (प्रणीतौ) उत्तम धर्म युक्त नीति में आपकी स्त्री (स्याम) होऊँ।

भावार्थ-विवाह के समय ही पति-पत्नी प्रतिज्ञा करें कि वे व्यभिचार से अलग रहेंगे। व्यभिचार तो आयु का नाशक, निन्दा के योग्य कर्म है इसलिए इसे सब प्रकार छोड़ धर्माचरण से पूर्ण अवस्था सुख को भोगें। गृहस्थ में रहते हुए व्यक्ति को पुरूषार्थ द्वारा धर्माचरण में जीविका कमानी चाहिए। विधि पूर्वक अन्न-जल का सेवन कर शरीर को नीरोग रखें।

**संवर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सं शिवेन।**
**त्वष्टा सुदत्रो वि दधातु रायोऽनु मार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्।।**

**यजु. 8.14**

**पदार्थ**-हे सब विद्याओं को पढ़ाने (त्वष्टा) सब व्यवहारों के विस्तार कारक (सुदत्रः) अत्युत्तम दान देने वाले विद्वान्। आप (संशिवेन) ठीक ठीक कल्याणकारक (मनसा) विज्ञान युक्त अन्तः करण (संवर्चसा) अच्छे अध्ययन अध्यापन के प्रकाश (पयसा) जल और अन्न से (यत्) जिस (तन्वः) शरीर की (विलिष्टम्) विशेष न्यूनता को (अनुमार्ष्ट) अनुकूल शुद्धि से पूर्ण और (रायः) उत्तम धनो को (विदधातु) विधान करो। उस देह और शरीरों को हम लोग (तनूभिः) ब्रह्मचर्य व्रतादि सुनियमों से बलयुक्त शरीरों से (समग्रन्महि) सम्यक् प्राप्त हों।

एक श्रेष्ठ गृहस्थ को चाहिए कि वह किसी भी प्रकार के अपराध से बच कर रहे तथा परिचित व्यक्ति को अपराध से दूर करने का प्रयत्न करता रहे।

यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र संख्या 13 का यही भाव है।

एक अच्छे गृहस्थ को अहंकार एवं ईर्ष्या से भी बचना चाहिए।

**अहरहरप्रयावं भरन्तोऽश्वायेव तिष्ठते घामसस्मै।**
**रास्पोषेण समिषा मदन्तोऽग्ने मा ते प्रतिवेशा रिषाम।।**

**यजु. 11.75**

पदार्थ-हे (अग्ने) तेजस्वी विद्वान् पुरूष (अहरहः) नित्य प्रति (तिष्ठते) वर्तमान (अश्वायेव) जैसे घोड़े के लिए घास आदि खाने का पदार्थ आगे धरते हैं वैसे (अस्मै) इस गृहस्थ पुरूष के लिए (अप्रयावम्) अन्याय से पृथक् गृहाश्रम के योग्य (घासम्) भोगने योग्य पदार्थों को (भरन्तः) धारण करते हुए (रायः) धन की (पोषेण) पुष्टि तथा (इषा) अन्नादि से (संमदन्तः) सम्यक् आनन्द को प्राप्त हुए (प्रतिवेशाः) धर्म विषयक प्रवेश के लिए हम लोग (ते) तेरे ऐश्वर्य को (मा रिषाम) कभी नष्ट न करें।

गृहस्थ पुरूष को आपसी लेन-देन में सत्याचरण करना चाहिए।

**देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे।**
**निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा।।** यजु. 3.50

**पदार्थ**-हे मित्र! तुम (स्वाहा) जैसे हृदय में सत्यवाणी कहे वैसे (मे) मुझ को यह वस्तु (देहि) दे। मैं (ते) तुझ को यह वस्तु (ददामि) देऊंगा। तू (मे) मेरी यह वस्तु (निधेहि) धारण कर। मैं (ते) तुम्हारी यह वस्तु (निदधे) धारण करता हूँ। तू (मे) मुझको (निहारम्) मूल्य से क्रय की जाने वाली वस्तु को (हरासि) दे। मैं (ते) तुझको (निहारम्) वस्तु का मूल्य (निहराणि) निश्चय करके दूंगा। (स्वाहा) ये सब व्यवहार सत्य वाणी से करे अन्यथा से व्यवहार सिद्ध नहीं होते हैं।

**गृहस्थ को प्रतिदिन यज्ञ एवं परमात्मा की उपासना करनी चाहिए।**

**यस्मान्न जातः परोऽअन्योऽस्तियऽआविवेश भुवनानि विश्वा।**
**प्रजापतिः प्रजया सꣳराणस्त्रीणि ज्योतिंषि सचते से षोडशी।।** यजु. 8.36

(क्रमशः)

# दिव्यता के सूत्र

ले.-महात्मा चैतन्यमुनि, महर्षि दयानन्द धाम, सुन्दरनगर, जि०मण्डी

( गतांक से आगे )

तीसरे प्रश्न का उत्तर दिया गया है-'अहं सोम: वृष्ण: अश्वस्य रेत:' अर्थात् यह सोम-वीर्य ही तेजस्वी, अनथक पुरूष की शक्ति है। आज के इस आत्मघाती युग में जहां सब ओर सैक्स का नंगा नृत्य हो रहा है, वेद की यह शिक्षा न केवल अनिवार्य है बल्कि अपरिहार्य भी है। आज व्यक्ति के चरित्र का पतन इसीलिए हो रहा है क्योंकि हम लोगों ने ऋषि-मुनियों की अनमोल शिक्षाओं को दर किनार कर दिया है। कभी किसी ने एडस जैसी बीमारी का नाम नहीं सुना था मगर आज इस भयंकर बीमारी का आतंक सारे संसार में फैल गया है। यह सब मुक्त रूप से भोग भोगने का ही दुष्परिणाम है। इस उपचार रहित बीमारी से निजात पाने के लिए दीवारों पर नारे लिखे जा रहे हैं कि एक पत्नी या एक पतिव्रता बनों। हमारे ऋषि-मुनियों ने पहले ही इस प्रकार की व्यवस्था कर रखी है मगर उस शिक्षा को न मानने का ही यह कुफल भोगना पड़ रहा है और इससे बचने का ढंग वास्तव में ही संयमित जीवन जीने की दिशा पर चलना ही है। एडस की बीमारी मुख्य रूप से यही है कि इससे रोगी के भीतर बीमारी से लड़ने की शक्ति क्षीण हो जाती है। दूसरे शब्दों में कहें तो व्यक्ति इतना निस्तेज हो जाता है कि उसमें किसी बीमारी से लड़ने की शक्ति ही नहीं रहती है। इसलिए शक्ति का स्त्रोत वेद ने वीर्य को बताया है। अत्यधिक वीर्य के क्षरण से व्यक्ति का ओज और तेज नष्ट हो जाता है। इसलिए इस जीवन स्थली को भोगस्थली नहीं बल्कि यज्ञ स्थली बनाने की जरूरत है। गृहस्थ जीवन में भी जो व्यक्ति शास्त्रानुमोदित नियमों पर चलता है महर्षि जी उसे भी ब्रह्मचारी जैसा ही कहते हैं। यहां हम केवल एक लौकिक उदाहरण देकर इस प्रसंग को विराम देना चाहेगें। आयुर्वैदिक शास्त्रों में बताया गया है कि भोजन पचने की प्रक्रिया में से गुजरता हुआ बहुत सार रूप में जब पहुंचता है तो वीर्य बनता है। इस कठिनता से बनें वीर्य को जो व्यक्ति अज्ञानता के कारण यूँ ही नष्ट करता रहे उसे कोई भी बुद्धिमान नहीं कह सकता है। जिस प्रकार एक माली कितने ही फूलों का रस लेकर उसे अनेक प्रकार की प्रक्रियाओं में से गुजारता हुआ इत्र की कुछ बून्दे बनाता है यदि वह बने हुए अनमोल इत्र को गन्दी नाली में यूँ ही फैंक दे तो उसे कोई भी बुद्धिमान नहीं कहेगा बल्कि उसकी नादानी पर सबको तरस ही आऐगा। ठीक ऐसे ही बड़ी कठिनता से बनें इस अनमोल धातु को संभालकर रखने की आवश्यकता है क्योंकि इसी से व्यक्ति के भीतर अपार शक्ति का संचय हो पाता है। इसलिए वेद भी कह रहा है कि वीर्य ही व्यक्ति के तेज और कर्मठता का आधार है। चौथे प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा गया है-'ब्रह्मायं वाच: परमं व्योम' अर्थात् यह ब्रह्म ही वाणी का परम आकाश है। शब्द आकाश का गुण है मगर आकाशत्व का कारण भी परमात्मा ही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी यजुर्वेद (5-10) के मन्त्र का भाष्य करते हुए वाणी के बारे में निर्देश देते हैं कि वाणी शिक्षा विद्या से संस्कृत होनी चाहिए तथा सत्य भाषणयुक्त और मधुर गुण सहित होनी चाहिए। मनु महाराज जी ने (12-6) कठोर वचन, मिथ्या भाषण, चुगली करना और असम्बन्ध प्रलाप करना वाणी के चार पाप बताए हैं। इसलिए हमें वाणी के प्रयोग में बहुत ही सावधानी बर्तने की जरूरत है। विवेचित मन्त्र में वाणी का परम व्योम परमात्मा बताया गया है इसलिए वाणी का महत्व प्रभु भजन में ही है। हमें परमात्मा की उपासना करने के मार्ग का कदापि त्याग नहीं करना चाहिए क्योंकि महर्षि जी के शब्दों में जो परमात्मा की उपासना नहीं करता है वह मूर्ख ही नहीं बल्कि कृतघ्न भी है। परमात्मा की कृपा से हमें संसार की समस्त न्यामतें मिली हुई है और इससे बड़ी कृतघ्नता भला क्या होगी कि हम परमात्मा का धन्यवाद तक न करें। वेद ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य भी परमात्मा की प्राप्ति ही बताया गया है अन्यथा वेद ऋचाओं का अध्ययन करने से भी क्या लाभ?

**ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्य-स्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः।**
**यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।।**

( ऋ० 2-12-5 )

अर्थात् जिस अद्भुत परमात्मा के विषय में शकांलु लोग पूछा करते हैं कि वह कहां है? और कुछ कहते हैं कि वह है ही नहीं। वह परमात्मा ऐसे प्रतिकूल विचारधारा रखने वाले के सब सांसारिक वैभव भूकम्प के समान नष्ट कर देता है। इसलिए संसार के लोगों उस परमात्मा पर भरोसा और श्रद्धा रखो क्योंकि वहीं परमैश्र्यवान् और समस्त एश्वर्यो का देने वाला है।

इस प्रकार उपरोक्त पंक्तियों में जो चार प्रश्न उठाए गए और उनके अत्यधिक महत्वपूर्ण उत्तर दिए गए इनका अनुसरण करने से ही हमारा जीवन सार्थक हो सकता है क्योंकि ये ही दिव्य जीवन प्राप्त करने के सूत्र हैं। इनका अनुसरण करने वाला व्यक्ति ही देवता बनकर जीवन की समस्त उपलब्धियों को प्राप्त कर सकता है। ऐसे व्यक्ति का तो समूचा जीवन ही वेद के निम्न मन्त्र के समान एक यज्ञ ही बन जाएगा-

**यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।**
**इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः।।**

( अथर्व० 2-35-5 )

ऐसा जीवन जीने वाला व्यक्ति कह सकेगा कि मैं मुख से, वाणी से, कान से और मन से हवन ही करता हूँ। यह मेरा जीवन-यज्ञ जगत रचियता परमात्मा ने विस्तृत किया है, इसमें सब देव, दिव्य भाव प्रसन्नतापूर्वक आवें... समाविष्ट हों...

उपरोक्त चारों उत्तरों में एक क्रमबद्धता है, जो व्यक्ति इस पृथिवी को या मानव जीवन को देवयजनि समझकर दिव्यता प्राप्त करने की दिशा में चलेगा वही यज्ञ और परोपकार के कार्यों को आत्मसात् करेगा और ऐसा करने से उसके भीतर अपार बल-वीर्य की वृद्धि होगी और वह परमात्मा की उपासना के मार्ग पर चलकर अपने अन्तिम लक्ष्य को भी प्राप्त कर लेगा।

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह...

रानी अरोड़ा, राजीव कुन्दरा, हितेश स्याल, रितेश कुमार, सुरेश ठाकुर, प्रिया मिश्रा, अमित शर्मा व अन्य मौजूद थे। आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य ने कहा कि ईश्वर ने सृष्टि को अपनी शिक्षा का सरलतम माध्यम बनाया है। उन्होंने कहा कि कितना भी कम पढ़ा लिखा इंसान जीवन जीने की श्रेष्ठ शैली सीख सकता है। आर्य समाज के महामंत्री हर्षलखनपाल ने मंच संचालन किया।

-रणजीत आर्य प्रधान आर्य समाज

## आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

## पृष्ठ 2 का शेष-शिक्षा-वेदकालिक और आधुनिक

विकसित किया जाता था। राजपुत्र या निर्धनपुत्र सब समान होते थे। यही कारण है कि भारतीय इतिहास में कृष्ण सुदामा के प्रेम जैसे विलक्षण प्रेम के उदाहरण हैं। प्राचीन शिक्षा पद्धति में तप का विशिष्ट स्थान था। तब प्रधान शिक्षक व आचार्य आश्रम में प्रविष्ट करने वाले शिष्य की कटि में मेखला बांधते हुए कहते थे 'मैं मेखला बन्धन करता हुआ तुम्हें ब्रह्मचर्य, तप और श्रम से बांधता हूं।'

शिक्षाकाल में ब्रह्मचर्य आदि का बहुत महत्व स्वीकार किया जाता था। ब्रह्मचर्य का अर्थ है ज्ञान, सत्य एवं सदाचरण की साधना का व्रत ग्रहण करना तथा उसके पालन की अनवरत निष्ठा व तत्परता। ब्रह्मचर्य का प्रचलित स्थूल अर्थ भी इसी में समाविष्ट है। तप का अर्थ सुख दुख और शीतोष्णादि समभाव से सहन करना। श्रम से अभिप्राय: है कि मानसिक श्रम, शारीरिक श्रम व व्यायाम आदि करना। वैदिक मेखला बन्धन इन सबका प्रतीक होता था और शिक्षाकाल में इनके अनुष्ठान से मेधा, सुमति और इन्द्रिय शक्तियों का विकास निश्चित ही है।

इसके साथ साथ वैदिक काल में आर्ष पाठ विधि से शिक्षा दी जाती थी जिससे विद्यार्थी अल्प परिश्रम से अधिक ज्ञान प्रप्त कर लेता था और उसे एक समय में विशेष रूप से ही विषय का मर्म समझाया जाता था। गुरु शिष्य का सम्बन्ध वैसा ही सम्बन्ध होता था जैसा कि गर्भस्थ बालक का माता के साथ। तत्कालीन शिक्षा प्रणाली की सरसता पर भी ध्यान दिया जाता था जो कि छात्र के लिये आकर्षक होती थी। वेद में उल्लेख आता है जहां विद्यार्थी गुरु से कहता है-'हे गुरुवर! आप ऐसे खेल खेल में पढ़ाइये कि जो कुछ मैं सुनूं वह मुझमें अच्छी तरह से रहे। जो कुछ हम गुरुमुख से सुनें उससे संगत रहें, वह हमें विस्मृत न हो यहां ध्यातव्य है कि आज शिक्षण प्रणाली के जिस Playway Method को अमेरिका की देन मानकर हम उसके आभारी अनुभव करते हैं, वह हमारी ही सम्पदा है जिस पर हमें गर्व होना चाहिये।'

**आधुनिक शिक्षा प्रणाली:**

वेदकालिक शिक्षा प्रणाली के विपरीत आधुनिक शिक्षण प्रणाली अधूरी और अव्यावहारिक है जिसने देश को बिल्कुल खोखला कर दिया है। थोड़ा थोड़ा सब विषयों का ज्ञान भले ही विद्यार्थी को हो परन्तु ठोस योग्यता एक में भी नहीं मिलेगी। आज की शिक्षा इतनी व्यय साध्य है कि खर्च करते करते अभिभावकों की मानो कमर ही टूट जाती है। इस प्रणाली ने छात्र को किताबी कीड़ा तो बना दिया है किन्तु पूर्ण ज्ञाता और समाधाता नहीं। उसमें निराशा का भाव पैदा किया है आशा का संचार नहीं। छात्र चाहे मेधावी हो या अल्पमति, सबको एक ही प्रणाली से पढ़ना होगा। घोड़े व गधे दोनों को एक ही डंडे से हांका जा रहा है। वर्ष के अन्त में परीक्षा की दृष्टि से कुछ प्रश्न रटकर और अनुचित साधनों का प्रयोग करके मूर्ख किन्तु चालाक छात्र उत्तीर्ण हो जाते हैं और वे ही संसार में तिकड़मों से उत्तरदायी पदों पर नियुक्त हो जाते हैं। तब क्या उनसे यह आशा की जा सकती है कि वे देश और युग को लाभान्वित कर सकेंगे। आज की शिक्षण प्रणाली में नैतिकता, चरित्र निर्माण, सहनशीलता, तप, त्याग, अनुशासन, आज्ञापालन, कर्त्तव्य-पालन, विनम्रता प्रभृति गुणों के लिये जैसे कोई स्थान ही नहीं रहा। मानव समुदाय भूल चुका है कि जीवन को सफल बनाने के लिये शिक्षा की आवश्यकता है डिग्री की नहीं।

**निष्कर्ष:**

आज के कम्प्यूटर युग में मानव चाहे जितनी भी भौतिक उन्नति कर ले परन्तु जीवन की सर्वतोमुखी उन्नति के लिये उसे नैतिकता और आध्यात्मिकता से मुख नहीं मोड़ना चाहिये। आज भले ही यह सम्भव न हो कि सब विद्यार्थी गुरुकुलों में जाकर रहें, भोजन के लिये भिक्षा मांगें, परन्तु त्याग, तप, ब्रह्मचर्य पालन, विनम्रता, सेवाभाव आदि शाश्वत आदर्शों को तो साथ लिया जा सकता है। ये सब गुण देश व काल की सीमा में बंधे हुए नहीं हैं। ये तो हर स्थान व हर समय में मनुष्य के आदर्श हैं। अत: आधुनिक शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य ऐसा होना चाहिये जिसमें अशान्त मन को शान्त करने, अपने वश में रखने का पाठ पढ़ाया जाये। अपनी वृत्तियों को पतन के मार्ग से हटाकर शुभ कार्यों की ओर लगाने का प्रकार सिखाया जाये। रोज़ी रोटी की भूख के साथ साथ इस सृष्टि को बनाने वाले परमात्मा की प्राप्ति की भूख को जागृत करने का पाठ्यक्रम शिक्षा में समाविष्ट किया जाना चाहिये ताकि आने वाले समय में हम अपने उज्ज्वल अतीत की रोशनी से भविष्य के मार्ग को रोशन कर सकें।

## आर्य समाज जीरा में लोहड़ी तथा मकर संक्रांति का पर्व मनाया

आर्य समाज जीरा में 13 जनवरी 2019 तथा 14 जनवरी 2019 को क्रमश: लोहड़ी एवं मकर संक्रांति का पर्व बड़ी ही श्रद्धा के साथ मनाया गया, जिसमें सर्वप्रथम इस पर्व का शुभारम्भ इस समाज के पुरोहित श्री किशोर कुणाल जी ने प्रात: 9 बजे महायज्ञ से किया, जिसमें मुख्य यजमान के स्थान को पुरोहित जी के सुपुत्र सुबोध कुमार आर्य और पुत्रबधू लालसा कुमारी आर्य ने सुशोभित किया। यज्ञोपरपांत पुरोहित जी ने लोहड़ी एवं मकर संक्रांति पर्व के ऊपर बड़े ही विस्तार से प्रकाश डाला तथा यजमान बने पुत्र व पुत्रवधू को जीवन में फूलने फलने और दीर्घायु की ईश्वर से प्रार्थना की तथा सभी उपस्थित आर्य सज्जनों को इस पर्व के ढेरों सारी बधाईयाँ दीं। यह पर्व इस समाज के प्रधान श्री सुभाषचन्द्र आर्य की अध्यक्षता में मनाया गया। अन्त में शांतिपाठ के बाद सभी को रेवड़ियाँ व मूंगफलियाँ वितरित की गईं।

**मंत्री-सुनील कुमार आर्य**

## आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना में वेद सप्ताह से पूर्व प्रभात फेरियों का आयोजन

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना के वेद सप्ताह के उपलक्ष्य में लुधियाना में तीन दिन पहले 18 जनवरी से 20 जनवरी तक लुधियाना के विभिन्न हिस्सों में प्रभात फेरियों का आयोजन किया गया। प्रभात फेरी में ठंड में भी आर्यों का जोश देखने लायक था। इस सम्बन्ध में पहला पड़ाव 18 जनवरी दिन शुक्रवार को सुबह सात बजे श्री संत कुमार जी के घर पर हुआ। इस अवसर पर पूरे परिवार ने फूल वर्षा के साथ गर्म दूध एवं मिठाइयों, नमकीन के साथ प्रभात फेरी में शामिल आर्यों को वितरित किये गये। आर्यजनों ने वहां ऋषि दयानन्द जी के भजन गाए। दूसरा पड़ाव पुष्प जी खुल्लर जी के घर पर हुआ। इस अवसर पर खुल्लर परिवार ने गर्मजोशी से प्रभात फेरी का स्वागत किया। इस अवसर पर भजनों का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। अंत में प्रभात फेरी में पधारे आर्यजनों को ऋषि प्रसाद वितरित किया गया।

दूसरी प्रभात फेरी 19 जनवरी 2019 दिन शनिवार को सुबह सात बजे दाल बाजार से प्रारम्भ हुई। प्रभात फेरी पूरे रास्ते भजन गाते हुये चल रही थी। इस प्रभात फेरी का पहला पड़ाव हमारे प्रेरणा स्रोत स्वर्गीय कुलदीप जी के घर पर जहां पूरे परिवार ने फूल वर्षा के साथ प्रसाद वितरित किया। दूसरा पड़ाव डिवीजन नम्बर तीन के पास शैम्पी जी के यहां रहा जहां पूरे परिवार ने गर्मजोशी के साथ प्रभात फेरी का स्वागत किया और अंत में ऋशि प्रसाद चने कुलचे चाय नमकीन इत्यादि नाश्ता करवाया। तीसरे दिन की प्रभात फेरी समराला चौक से प्रारम्भ होकर अरुण सूद जी और अजय सूद जी के घर पर आई। रास्ते में भजन गाते हुये आर्यों का जोश देखने लायक था जहां पूरे परिवार ने गर्मजोशी से सवागत किया और फूल वर्षा के साथ स्वागत किया। आज प्रभात फेरी में सम्मानीय आचार्य रामानंद जी शिमला वाले भी विशेष रूप से आशीर्वाद देने के लिये पधारे। आचार्य जी ने अपने उपदेश में बताया कि इस तरह की प्रभात फेरियां ही आर्य समाज के प्रचार प्रसार का मुख्य अंग हैं और इस तरह की प्रभात फेरी देख कर उन्हें गुरुकुल में विद्यार्थी रूप की याद आ गई। आचार्य जी ने उपदेश किया कि आर्य समाज में अगर दिल से लगाव नहीं है तो आप आर्य समाज के साथ जुड़े होकर भी अनजान बने रहेंगे। उन्होंने आह्वान किया कि आर्य समाज से दिल से जुड़ो और आर्य समाज के प्रसार प्रसार में तन मन धन से आगे आएं। अंत में सूद परिवार द्वारा ऋषि प्रसाद वितरित किया गया। इन प्रभात फेरियां में विशेष रूप से सुरेन्द्र टंडन, संजीव चड्ढा, सतपाल नारंग, सुभाष अबरोल, संत कुमार, रमाकांत महाजन, पुष्प खुल्लर, सुरेश चड्ढा, राजेश मरवाह, सुमित टंडन, अनिल आर्य, राजेन्द्र बत्रा, बालकृष्ण शास्त्री, अरविन्द शास्त्री, सुरेन्द्र शास्त्री त्रिलोक, कपिल नारंग, किरण टंडन, परवीन, बाला चोपड़ा, रेणु बधवा, बाला गम्भीर, संयोहित महाजन, कमलेश पाहवा, सुलक्षणा सूद, प्रेम पाहवा, चरणजीत पाहवा, अनिल पाहवा, अजय बतरा, रजनी गम्भीर, शैली खुल्लर आदि आर्य जन प्रभात फेरियां में सम्मिलित हुये।

**-सुरेन्द्र टण्डन मंत्री आर्य समाज**

# आर्य समाज मंदिर गुरुकुल विभाग फिरोजपुर ने मनाया मकर संक्रान्ति पर्व

**आर्य समाज मंदिर गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर में मकर संक्रान्ति पर्व बड़ी ही श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के सदस्य हवन यज्ञ करते हुये जबकि चित्र दो में गरीब परिवारों को राशन वितरित करते हुये आर्य समाज के सदस्य।**

आर्य समाज मंदिर गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर में मकर संक्रान्ति पर्व बड़ी ही श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सबसे पहले डा. विनोद मेहता जी ने वैदिक रीति रिवाज से मंत्रोच्चारण करके यज्ञ सम्पन्न करवाया। श्री शान्ति भूषण शर्मा जी ने यजमान पद ग्रहण करते हुये बड़े प्यार से यज्ञ में आहूतियां प्रदान की। शेष सभी आए हुये सदस्यों ने उनका साथ दिया। यज्ञ की परिभाषा देते हुये डा. मेहता ने बताया कि यज्ञ श्रेष्ठ कर्म है। इसके करने से हमारे पास रोग कभी नहीं आते तथा पर्यावरण की शुद्धि होती है। इसीलिये हमें प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिये। उन्होंने कहा कि हमें प्रतिदिन प्रात: और सायं शुद्ध होकर यज्ञ करना चाहिये। उन्होंने कहा कि यज्ञ शब्द अनन्तता का सूचक है। स्वयं जीवन भी एक यज्ञ है, इस जीवन यज्ञ को सुनियमित बनाने के लिए ब्रह्मयज्ञ एवं देवयज्ञ दोनों ही अपेक्षित हैं। ब्रह्मयज्ञ चिन्तन से सम्बद्ध हैं। आत्मा को बलवान बनाने के लिए, इन्द्रियों को संयमित एवं सशक्त करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि सारथि के साथ रथ को सुचारू रूपेण चलाने योग्य। इन्द्रियों को बलवान, यशस्वी एवं पवित्र बनाने के लिए ब्रह्म यज्ञ किया जाता है। मुण्डकोपनिषद में कहा गया है कि- नायमात्मा बलहीनेन लभ्य: अर्थात् निबर्लेन्द्रिय ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते। ईश्वर के गुण स्वभाव को अपने अन्दर लाने एवं उन गुणों के अर्थ की भावना मन में धारण करने से मनुष्य के अन्त:करण में उन गुणों का प्रभाव पड़ता है और क्रमश: वे मानव जीवन से अभिन्न हो जाते हैं। गुणों के समावेश से ईश्वर का सामीप्य ही ब्रह्म यज्ञ का लक्ष्य है। सन्ध्या, स्वाध्याय के अनन्तर देवयज्ञ का विधान है जो सैद्धान्तिक एवं धार्मिक होने के साथ-साथ सामाजिक, सुखशान्ति एवं नियमन का भी प्रेरक है। आध्यात्मिकता के साथ-साथ वैज्ञानिकता से परिपूर्ण इस यज्ञ के विषय में आर्ष ग्रन्थों में कहा गया है कि- अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकाम: अर्थात् स्वर्ग की इच्छा रखने वाला पुरूष अग्निहोत्र करे। इस भौतिक यज्ञ से जलवायु शुद्ध होती है एवं रोगकारक कीटाणुओं का नाश होता है। प्राणशक्ति के संवर्धन के साथ परिमित वृष्टि करने में भी भौतिक यज्ञ अत्यन्त सहायक है।

यज्ञ उपरान्त श्रीमती प्रेमसखी भाटिया तथा छोटी सी बच्ची नंदनी ने वैदिक भजन गाकर सभी आए हुये सदस्यों का मनमोह लिया। इसके पश्चात श्रीमती प्रेम सखी भाटिया तथा शान्ति भूषण शर्मा जी तथा अन्य सदस्यों ने मिल कर जरूरतमंद नारियों को राशन बांटा। यह राशन आर्य समाज के सदस्यों ने मिल कर इकट्ठा किया था। आर्य समाज मंदिर गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर के सभी सदस्य हमेशा ऐसे सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। श्री शान्ति भूषण शर्मा जी ने कहा कि हमें स्वामी दयानन्द के वचनों की पालना करनी चाहिये। उन्होंने कहा कि नारी यदि मजबूत है तो परिवार और देश मजबूत होगा। इसलिये हमें जहां भी हो सके नारी की सहायता करनी चाहिए। इसी तरह शाम को आर्य समाज मंदिर की तरफ से खाना बना कर अंधविद्यालय के सदस्यों को खिलाया गया। श्री सर्वहितैषी भाटिया, कर्ण, डा. विनोद मेहता तथा विपिन धवन जी ने बड़ी श्रद्धा से उन्हें खाना खिलाया।

**डा. विनोद मेहता**
**संरक्षक आर्य समाज**

# आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर में साप्ताहिक हवन यज्ञ सम्पन्न

**आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के साप्ताहिक सत्संग में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य श्री हरीश कुमार शर्मा एवं उनकी धर्मपत्नी मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित हुए। इस अवसर पर उन्हें आर्य समाज द्वारा महर्षि दयानन्द का चित्र देकर सम्मानित भी किया गया।**

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में रविवार को साप्ताहिक सत्संग में यज्ञ, प्रवचन व भजन हुए। इसमें सेवा निवृत्त सुपरिटेंडेंट आफ पुलिस एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य श्री हरीश शर्मा व कंचन शर्मा मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित हुये। आर्य समाज के पुरोहित हंसराज शास्त्री ने विधिवत वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हवन यज्ञ सम्पन्न करवाया। इसके बाद आर्य समाज की प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती, सीमा अनमोल व रवि कुमार ने ईश्वर भक्ति के भजन सुना कर सभी को मंत्रमुग्ध किया। आर्य समाज के विद्वान श्री सुशील शर्मा जी ने कहा कि इस धरती पर परमात्मा ही पूर्ण है।

उसी परमात्मा के नियम से ही इस पूर्ण जगत की उत्पत्ति होती है। उन्होंने कहा कि परमात्मा के बनाए हुये नियम सभी कालों में पूर्ण सत्य तथा अपरिवर्तनीय होते हैं। उन्होंने कहा कि योगी ही अपने भीतर सत्य की खोज करता है। इस अवसर पर भूपिन्द्र उपाध्याय, ओम प्रकाश मेहता, ईश्वर चंद्र रामपाल, राज कुमार सेठ, चौधरी हरीश चन्द्र, सुरेन्द्र अरोडा, रीतिका अरोड़ा, विजय चावला, पूनम मेहता, उर्मिल भगत, सुभाष मेहता, सुनित भाटिया, डिम्पल भाटिया, सुरेन्द्र खन्ना, रेवा खन्ना, अमित सिंह, सुनील मिश्रा, अनिल मिश्रा, उर्मिल शर्मा, ललित मोहन कालिया, बैजनाथ, सुमित भाटिया, मोहित खन्ना, रविन्द्र आर्य, राजीव शर्मा, अर्चना मिश्रा, प्रवीण शर्मा,

(शेष पृष्ठ 6 पर)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।